Received: Mar '23
Revised:
Accepted: Apr '23

© 2023 by the authors. This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY) license (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/).

WOMEN IN INDIAN SOCIETY AND LITERATURE
भारतीय समाज और साहित्य में स्त्री

Dr. Archana Godara[1] and Dr. Abhilasha Abusaria[2]
[1] Assistant Professor, Department of Political Science, Govt. N.M. College, Hanumangarh, Rajasthan, India
[2]Assistant Professor, Department of Political Science, Government Girls College, Jhunjhunu, Rajasthan, India
E-mail- [1]archanamps@gmail.com, [2]abhilasha.abusaria80@gmail.com

ABSTRACT

The life of a story A woman has struggled in real life. Changes have been taking place in society from time to time, but the change in the social status of women is like cumin in the mouth of a camel. Given the title of housewife, she has a worse life than a domestic servant. A woman's life is like a bird kept in a golden cage, which cannot see the open sky in the light of that shining cage and very naively gives up trying to fly in the open sky. But the restlessness of some birds flaps their wings. In the same way, some women want to move forward despite struggling with their society and families. These women are emerging as a reference group for society.

कहानी कथाओं की स्त्री का जीवन वास्तविक जीवन में संघर्षपूर्ण रहा है। समाज में समय– समय पर परिवर्तन होते रहे है परन्तु स्त्री की सामाजिक स्थिति में बदलाव ऊँट के मुँह में जीरे के समान है। गृहस्वामिनी की उपाधी प्रदान कर घरेलू नौकर से बदतर जीवन उसे दिया जाता है। स्त्री का जीवन सुनहरे सजीले पिंजरे में रखे उस पक्षी की तरह है जो उस चमकते पिंजरे की रोशनी में खुले आसमान को देख ही नहीं पाता और खुले आसमान में उड़ने की कोशिश को बड़े ही भोलेपन से त्याग देता है। परन्तु किसी –किसी पक्षी की बेचैनी पंख फड़फड़ाती है। ठीक उसी तरह कुछ महिलाएं आगे बढ़ना चाहती है जो अपने समाज और परिवार से संघर्ष कर रही हैं। ये स्त्रियाँ समाज के लिए एक संदर्भ समूह के रूप में उभर रही हैं।

Keywords: Religion, Women's wealth, Grihalakshmi, Vices, Job, Woman.

मुख्य शब्द: धर्म, स्त्रीधन, गृहलक्ष्मी, कुरीतियाँ, नौकरी, अबला।

प्रस्तावना

भारतीय समाज में स्त्री को बहुत सम्मान और ऊँचा दर्जा दिया गया है। स्त्री को देवी के समान समझा जाता है। पत्नी को गृहलक्ष्मी का दर्जा दिया जाता है। स्त्री के बिना कोई पुरुष किसी धार्मिक कार्य को पूर्ण नहीं कर सकता है। ये ऐसे उदाहरण है जो स्त्री को समाज में सम्माननीय दर्शाते हैं।

जहाँ तक प्राचीन भारत में स्त्रियों की स्थिति का प्रश्न है, समय– समय पर परिवर्तन होता रहा है। साथ ही तत्कालिन साहित्य में महत्त्व एवं समाज व्यवस्था में उसकी अपरिहार्यता को लेकर विरोधी विचार तथा दृष्टिकोण अभिव्यक्त हुआ है। यदि एक और शतपथ ब्रह्मण में उसके बिना पुरुष को अपूर्ण और अधूरा समझा गया है तो दूसरी तरफ महाभारत में स्त्री स्नेह तथा सन्तान से ही उसकी पूर्णता मानी गई है। वृद्ध संहिता में उसे श्री तथा लक्ष्मी के रूप में मनुष्य जीवन को सुख समृद्धि से प्रदिप्त करने वाली कहा गया है। महाभारत में तो यह भी कहा गया है कि यदि कोई व्यक्ति स्त्रियों के दोषों को 100 वर्ष तक 10 जिव्हाओं से भी गिनाता रहे तो वह उनके दोषों का बखान पूरा किये बिना ही मर जाएगा। स्वयं बुद्ध द्वारा यह स्वीकार किया गया है कि जिस प्रकार पाला पड़ने से फसल नष्ट हो जाती है, उसी प्रकार स्त्रियों के प्रवेश से धर्म नष्ट हो जाता है। यह विचार प्राचीन समाज व्यवस्था मे स्त्री की परिवर्तित स्थिति को इंगित करते हैं। वस्तुतः वैदिक युग से लेकर पूर्व मध्य युग तक उसकी स्थिति में अनेक उतार–चढ़ाव आते रहे तथा उसकी स्थिति उन्नत और परिष्कृत थी। न केवल उसके स्वतंत्रतापूर्ण शिक्षा प्राप्ति तथा विचरण का उल्लेख मिलता है बल्कि पारिवारिक, सामाजिक कार्यों के साथ–साथ यज्ञ के कार्यों को सम्पन्न करने में भी उसकी सहभागिता थी। अपाल सिकता, लोपामुद्रा, घोषा तथा निवाबरी जैसे उदाहरण इसके प्रमाण हैं।

कालान्तर में कर्मकाण्डों की जटिलता याज्ञिक शुद्धता और पवित्रता आदि सभी के लिए पुत्र की अपरिहार्यता के कारण उसकी स्थिति दयनीय होती गई। जिसके मुखर स्वर सूत्रों और स्मृतियों में अभिव्यक्त हुए हैं, उन्हें निःसहाय, निर्बल तथा परतन्त्र माना गया और उन पर अनेक प्रकार के प्रतिबंध लगा दिये गये। स्त्रीधन को छोड़ कर उसके सामाजिक अधिकार भी अस्वीकार्य हुए। मनुस्मृति में उल्लेख है कि कन्या, पत्नी और माता जैसी स्थिति में वे क्रमशः पिता, पति, पुत्र द्वारा नियंत्रित एवं संरक्षित है।

जैन एवं बौध धर्म के अपेक्षाकृत उदार बावजूद उनकी स्थिति में विशेष परिवर्तन दृष्टिकोण के ज्ञातव्य है। यद्यपि धर्मशास्त्रों की अपेक्षा इसके प्रभाव के कारण मौर्य युग में अच्छी स्थिति रही यद्यपि कौटिल्य ने भी संभ्रात घर की महिलाओं का उल्लेख अनिस्कायिकी के रूप में किया है। गुप्त युग में नारी शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित हुई। शाक्य

धर्म के प्रभाव के कारण गौरी एवं भवानी के रूप में माना गया तथा मनुस्मृति की तुलना में बृहस्पति एवं काव्यायन ने उसके साम्पत्तिक अधिकारों को अंशतः स्वीकार किया। परन्तु फिर भी दयनीय स्थिति सुस्पष्ट है। पर्दा प्रथा, बाल विवाह, सती प्रथा आदि जैसी विकृतियां तत्कालिन समाज व्यवस्था में स्पष्ट परिलक्षित होती है।

पिता कन्या के प्रति दायित्व भाव से बोझिल और संतृत्त होता हुआ दिखाई देता है। हर्षचरित में उल्लेखित है कि कन्या किसी अनागत वर की धरोहर है, जिसे उसे प्रत्यार्पित करना है। यह स्मृति उसके उत्पन्नकाल में पिता के मन पर संताप और बोस की तरह रहती आई है। पूर्व मध्यकाल तक आते–आते तो नारी पर नियन्त्रण और भी कठोर हो गये। धर्म और समाज की रक्षा के नाम पर स्त्रियों को सुरक्षित रखने के लिए अनेक ऐसी व्यवस्थाओं का नियमन हुआ जिनके कथन में उसका व्यक्तित्व सिमट कर रह गया और उसके विकास का मार्ग अवरुद्ध हो गया।

वर्तमान जीवन में अगर हम देखें तो स्त्री की परिस्थिति और उनके प्रति परिवार एवं समाज के व्यवहार में बहुत परिवर्तन आया है। इस व्यवहार को देखने से यह कोई नहीं कह सकता है कि भारत में स्त्री को देवी माना जाता है। साहित्य में अश्लील रचनाएँ प्रकाशित होती है। जिसमें स्त्री की सौम्यता, मातृत्व या बौद्धिक विशेषताओं का चित्रण नहीं होता है बल्कि उनमें घोर अश्लीलता दिखाई देती है। साहित्य ही नही सिनेमा में भी स्त्री को केवल एक शो पीस की तरह पेश किया जाता है तथा मनोरंजन की विषय वस्तु के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

उपभोग वस्तु

ए एस अल्तेकर ने अपनी पुस्तक *'पोजीशन ऑफ वीमेन इन हिन्दू सिविलाइज़ेशन'* में कहा है कि भारतीय धर्मशास्त्रों में नारी सर्वशक्ति संपन्न मानी गई है तथा विद्या, शील, ममता, यश और सम्पत्ति की प्रतिमा समझी गई है परन्तु वर्तमान में स्त्रियों के प्रति अपराधों की संख्या बढ़ती जा रही है क्योंकि उसे भोग विलास के साधन के रूप में देखा जाने लगा है। हमारे साहित्य एवं सिनेमा का इसमें बहुत बड़ा योगदान है तथा पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव भी इसका एक बहुत बड़ा कारण है। इन सब का प्रभाव ही है कि भारतीय समाज की स्त्री ने पवित्रता एवं गृहलक्ष्मी की सोच को बहुत पीछे छोड़ दिया। ईश्वर की इस अनुपम कृति को पितृसत्तात्मक समाज में माँ, पत्नी , बहिन के साथ साथ भोग्य भी समझा जाता है परन्तु "व्यक्ति" नहीं।

इसलिए आज उस पूजनीय माने जाने वाली स्त्री को हर क्षेत्र में ठगने का प्रयास किया जाता है। उसे प्रदर्शन एवं मनोरंजन का साधन मात्र बना कर रख दिया गया है।

बेटे का महत्त्व

हमारे समाज में उस स्त्री को महत्त्व दिया जाता है जो पुत्र को पैदा करती है। बेटी पैदा करने वाली माँ का कभी सम्मान नहीं किया जाता। हमारे देश में धार्मिक गुरुओं ने देशवासियों में यह विश्वास बना दिया हैं कि मनुष्य के अंतिम समय में यदि बेटा अंतिम संस्कार करें तो ही वह मनुष्य स्वर्ण पहुँच सकता है। इस प्रकार की सोच जो अत्ति प्राचीन काल से चली आ रही है, मनुष्य के मन–मस्तिष्क में अपना गहरा स्थान बना चुकी है कि वंश केवल बेटों से ही चलता है। भारतीय इतिहास में एक सत्य यह भी माना जाता है कि आज भी 'जनक सुता जग जननी जानकी' कहकर ही राजा जनक को याद किया जाता है। राजा जनक के ना तो बेटा था और ना ही भाई परन्तु फिर भी उनका वंश चल रहा है। वास्तविकता यह है कि परिवार का नाम योग्य संतान से चलता है फिर चाहे व बेटा हो या बेटी। एक अन्य उदाहरण श्रीमती इंदिरा गांधी का है जो अपने माता पिता की इकलौती संतान थी। पिता जवाहर लाल नेहरू की प्रिय बेटी ने ना केवल देश में बल्कि विश्व में अपनी पहचान बनायी थी। अपने ही बेटा तथा बेटी में अन्तर किया जाये ऐसा किसी ग्रन्थ में नही लिखा गया है।

पर्दा प्रथा

वर्तमान का एक सत्य यह भी है कि देश में आज भी पर्दा प्रथा प्रचलित है। प्रत्येक व्यक्ति यह चाह रखता है कि उनके परिवार घर–परिवार की बहुएँ पढ़ी लिखी हो तथा नौकरी करें परन्तु अपने ससुराल में वह पर्दा प्रथा का निर्वाह करें। यह एक बहुत ही हास्य जनक स्थिति है कि जो नारी घर से निकलती है वहाँ सभी के सामने बिना पर्दा और सिर ढ़के रहती है जहाँ हज़ारों लोग उसे देखते हैं। परन्तु जब वह स्त्री घर में प्रवेश करती है तब ससुराल वाले उसका चेहरा तक नहीं देखना चाहते और घूंघट निकालने को मजबूर करते हैं।

"मैं हुँ नारी, मैं हुँ इंसान।
क्या ये घूंघट ही है, मेरी पहचान।"

भारतीय समाज में महिला को हमेशा अबला माना गया है। जब ऐसे माहौल में कन्याओं का पालन पोषण किया जाता है तब ऐसी स्थिति में बचपन से ही उनके मन में असुरक्षा की भावना भर जाती है। उनको यही सिखाया जाता है कि उनका सम्पूर्ण जीवन पुरुष पर ही निर्भर है। जब वह एक छोटी बच्ची है तो पिता का संरक्षण, यदि वह बहन है तो भाई का संरक्षण तथा जब वह विवाहित हो जाये तो पति का संरक्षण, यदि पति की मृत्यु हो जाये तो उसके बेटे द्वारा उसे संरक्षण मिलता है। कहने का तात्पर्य यह है कि नारी स्वतंत्र नही है, वह बिना संरक्षक सुरक्षित नहीं रह सकती है।

सती प्रथा

जौहर के संबंध में जहाँगीर ने अपनी आत्म कथा "तुजुके जहाँगीरी" में लिखा है कि "जौहर ख्याति और पतिव्रता की अग्नि है ताकि कोई भी अवांछनीय व्यक्ति उनके पवित्र दामन को न छू सके।"

यह एक विचारणीय प्रश्न है कि पति की मृत्यु के बाद सती एवं जौहर क्यों? वो पिता, भाई, बेटा, देवर, ससुर जिन्हें उनका संरक्षक माना जाता है क्या वो उसकी रक्षा नहीं कर सकते? क्या वह स्त्री अपनी रक्षा स्वयं नहीं कर सकती? क्या हमारा समाज जिसे देवी कहता है, उस देवी को सुरक्षित नहीं रख सकता?

इन सभी स्थितियों से स्पष्ट होता है कि नारी की स्थिति एवं हैसियत हमारे समाज में उतनी अच्छी नहीं है जितना दिखने का प्रयास किया जाता है। उन्हें वह सम्मान तथा स्थान नहीं दिया जा रहा जिसकी वो हकदार है। हमारा समाज पहले भी पुरुषवादी था, आज भी है तथा कल भी रहेगा यदि हमारी सोच में कोई बदलाव नहीं आया तो।

ग्रामीण समाज

वर्तमान समय में नारी जीवन संक्रमण काल से गुजर रहा है। नारी का एक कदम घर से बाहर है परन्तु दूसरा कदम घर की चार दिवारी में ही है। शिक्षा से नारी की सोच एवं आगे बढ़ने की सीमा जरूर परिवर्तित हुई है परन्तु घर की चारदीवारी उसे आज भी पकड़ के बैठी हुई है। यह सत्य कथन है कि भारतीय समाज की आधी आबादी स्त्रीयों की है परन्तु उसे अपने हक का सम्मान नहीं दिया जा रहा है।

आज भी हमारे गाँव रूढ़िवादी सोच के साथ जी रहे हैं। यही कारण है कि गावों में महिलाओं की स्थिति बहुत दयनीय है। बाल–विवाह, पर्दा प्रथा जैसी कुरीतियाँ है। विधवा स्त्री को सामाजिक कार्यक्रमों में आगे नहीं रहने दिया जाता। उनका दर्शन करना अशुभ माना जाता है। उसके विधवा होने पर समाज उसी पर आरोप लगाता है कि वह अपने पति को खा गई। जहाँ ऐसी सोच हो वहाँ स्त्री की क्या हैसियत है? साहित्य में जिसे देवी कहा गया है उसी देवी के जन्म लेने से घर मे मातम जैसा माहौल हो जाता है। कवि मैथलीशरण गुप्त ने भी नारी की स्थिति को बताया है

"अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।
आँचल में है दूध और आँखों में पानी।"

स्त्री शिक्षा

माना जाता है कि शिक्षित समाज में स्त्रियों को सम्मान दिया जाता है। गरीबी और निरक्षरता व्यक्ति की सोच को विकसित नहीं होने देती। इसलिए वह स्त्रियों पर अपराधि दृष्टि रखता है। परन्तु वर्तमान स्थिति में शिक्षित व आत्मनिर्भर स्त्री

जो कि शिक्षित व्यक्ति के बीच रहती है तथा उनके साथ मिल कर कार्य करती है। वहीं स्त्री बलात्कार, यौन उत्पीन लिंगभेद तथा विभिन्न सामाजिक उत्पीडन की शिकार है। बहुत बार परिवार के लोग ही इसमें शामिल पाये जाते है।

बाल विवाह

जिस समाज में स्त्री को देवी, लक्ष्मी तथा गृहलक्ष्मी जैसी पदवियों से नवाजा जाता है उसी समाज में उसका बाल विवाह कर दिया जाता है, घर में घूँघट में रखा जाता है। उनकी शिक्षा को महत्त्व नहीं दिया जाता है। घर के महत्वपूर्ण फैसलों में उसकी भागीदारी को उचित नहीं माना जाता।

बाल विवाह कर उसके माता पिता स्वयं को एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी से मुक्त समझते हैं। उन्हें अपनी बेटी के भविष्य बजाय स्वयं की जिम्मेदारियों से मुक्त होने की चिंता सताती रहती है। इस चिंता में वो बेटी इच्छा, शिक्षा एवं आवश्यकताओं को भूल जाते हैं तथा उसे कोई महत्व प्रदान नहीं करते।

निष्कर्ष

मुंशी प्रेमचंद की रचनाओं में नारी को आदर्श नारी के रूप में पेश किया गया है। निःसंदेह प्रेमचंद एक युग दृष्टा थे और आदर्श भारतीय नारी चरित्र के पोषक थे। अपनी कृ ति गोदान की मिस मालती की भांति अपनी दूसरी रचना मानसरोवर द्वितीय की कहानी 'मिस पद्मा' का चरित्र एक स्वतंत्र विचारों वाली नारी होने के साथ–साथ आदर्श, उज्जवल नारी चरित्र के रूप में प्रस्तुत किया है।

बहुत से क्षेत्रों में अब नारी आगे आने लगी है वह एक लेखिका, वकील, नेता, अध्यापक, डॉक्टर, क्लेक्टर आदि के पद गृहण कर रही है। प्रेमचंद की रचनाओं में प्रस्तुत नारी चित्रण वर्तमान में सही प्रतित होता है। आज भी उससे यही अपेक्षा की जाती है कि वो घर की चार दिवारी तक ही स्वयं को समेट कर रखे। इसी में उसकी और उसके परिवार की इज्जत है। पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री की अवस्था दोयम दर्जे की है। नारी मन में असंतोष इस बात का भी है कि मनुष्य के रूप में जो अधिकार पुरुषों के लिए मान्य है, उससे महिलाओं को क्यों वंचित रखा जाता है? भारतीय समाज में स्त्रियों के लिए नियोग प्रथा, सती प्रथा, सती होने की अनिच्छा की स्थिति में देवर से पुनर्विवाह आदि नियम बनाये गए।

आज भी हमारे समाज में यहीं सोच है कि पिता के घर से डोली उठे और ससुराल के अर्थी उठे, अर्थात 'विवाह' से पहले पिता के संरक्षण में रहे तथा बिना विवाह के कहीं ना जाये। विवाह के पश्चात् चाहे कैसा भी जीवन जीना पड़े, उसे जीना चाहिए। वह कहीं भी नहीं जा सकती (यदि जायेगी तो केवल उसकी अर्थी)। इसी में उसके परिवार की और ससुराल की इज्जत मानी जाती है।

वर्तमान में परिस्थितियाँ पहले से बदल रही है। स्त्री का समाज में महत्त्व भी बढ़ रहा है परन्तु गाँव एवं कस्बों मे हालात ज्यादा नहीं बदले हैं। वहाँ परिवर्तन होने में अभी वक्त लगेगा। अन्त में यहीं कह सकते हैं कि हमारे भारतीय समाज में समय के साथ–साथ स्त्रियों की स्थिति में परिवर्तन आते रहे हैं परन्तु सर्वोत्तम परिणाम नहीं

आया। आज भी स्त्री की हैसियत बहुत कम आंकी जाती है तथा एक स्वतंत्र व्यक्तिव से बहुत दूर मानी जाती है।

सन्दर्भ सूची

1. सिंह, डॉ दिनेश कुमार : भारतीय परिवेश में महिलाओं की सामाजिक एवं राजनीतिक स्थिति, राज पब्लिकेशन, दिल्ली, 2018
2. सुजाता : आलोचना का स्त्री पक्ष पद्धती परंपरा और पाठ, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2021
3. सिंह, डॉ रीना प्रताप : नारी और भारतीय समाज प्राचीन से वर्तमान, के. एस. के. पब्लिकेशन एंड डिस्ट्रीब्यूटर, नई दिल्ली–110002
4. गुप्त, मैथिली शरण : यशोधरा (काव्य), 1933
5. सिंह, नामवर : प्रेमचंद और भारतीय समाज, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2010
6. कुमारी, डॉ सुमन : समाज और साहित्य नारीवादी अवधारणा, श्री नटराज प्रकाशन, दिल्ली, 2014
7. त्रिपाठी, डॉ श्रीपति, भारतीय समाज एवं संस्कृति में स्त्री धर्म, आदित्य पुस्तक सेंटर, वाराणसी, 2008